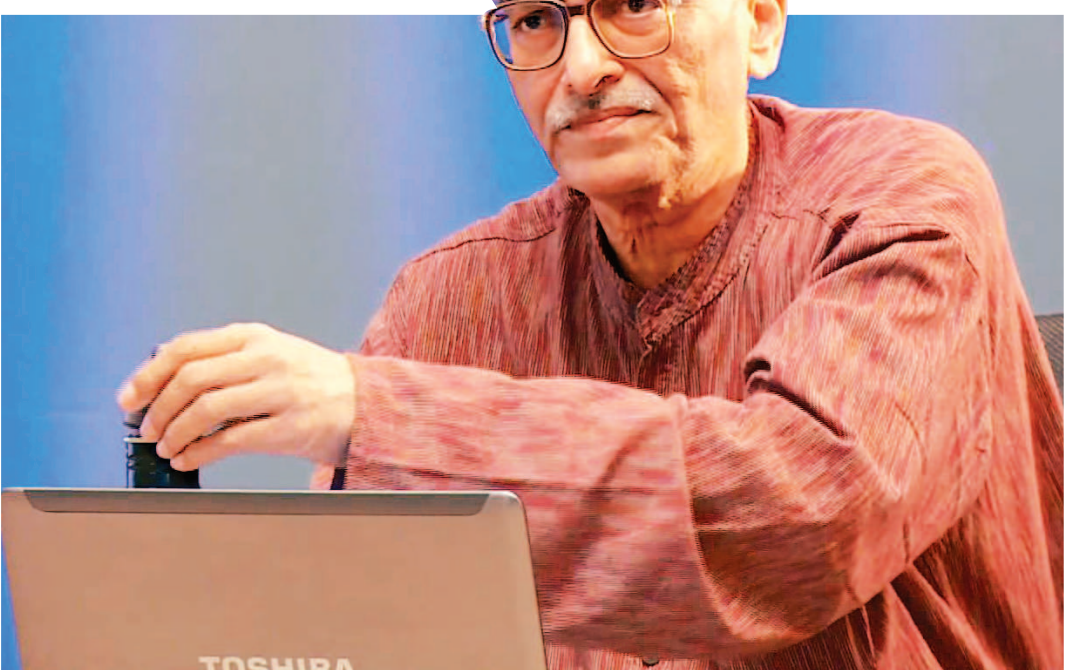


भारत का पहला सुपरकंप्यूटर परम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले चंद्रकांत राजू देश के प्रमुख वैज्ञानिक हैं। वह भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् की पत्रिका (जरनल) के संपादक रह चुके हैं। भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला और नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी, नई दिल्ली के फेलो रह चुके हैं। उन्होंने कई विषयों पर किताबें लिखीं हैं : भौतिकी पर (टाइम: टुवाइर्स ए कंसिस्टेंट थ्योरी, 1994), गणित के इतिहास और दर्शन पर (कल्चरल फाउंडेशंस ऑफ मैथेमेटिक्स, 2007) और विज्ञान, धर्म और नैतिकता के इंटरफेस पर (द इलेवन पिक्चर्स ऑफ टाइम, 2003)। उनके अनुसार उपनिवेशवादी राजनीति के अनुकूल समय की अवधारणा धर्मशास्त्र से विज्ञान (गणित, भौतिक विज्ञान) में चुस गई हैं। उनका मानना है कि आज देश में विज्ञान और गणित के माध्यम से ईसाई मजहबबी मान्यताएं स्थापित की जा रही हैं। उन्होंने गणित और विज्ञान के इतिहास की अनेक स्थापनाओं को चुनौती दी है।

गणित हम सभी ने पढ़ा है, परंतु क्या कभी गणित को औपनिवेशिक मानसिकता से स्वाधीनता दिलाने की लड़ाई भी हमने लड़ी है? गणित को स्वाधीन कराने की लड़ाई? क्या हमें कभी यह ध्यान में भी आया है कि गणित जैसा विषय भी औपनिवेशिक मानसिकता का शिकार हो सकता है? जो हैं, न केवल गणित और विज्ञान औपनिवेशिक मानसिकता के शिकार हैं, बल्कि एक योद्धा गणितज्ञ गणित और विज्ञान को औपनिवेशिकता से मुक्त कराने की लड़ाई छोड़े हुए है। यह योद्धा पूरी दुनिया में घूम-घूम कर सभी महान और श्रेष्ठ माने जाने वाले गणितज्ञों को चुनौती दे रहा है। ये योद्धा गणितज्ञ हैं डॉ. चंद्रकांत राजू। धर्म... विशेषकर ईसाइयत और विज्ञान में संघर्ष की बात अक्सर की जाती है, परंतु क्या कोई भी यह सोच सकता है कि ईसाइयत का विज्ञान और गणित के साथ कोई गठजोड़ भी है? क्या कोई सपने में भी सोच सकता है कि विज्ञान और गणित हमें ईसाइयत की शिक्षा देते हैं? राजू ने इसी गंठजोड़ के खिलाफ युद्ध छेड़ रखा है। वह न केवल इस गंठजोड़ को उजागर करते हैं, बल्कि उसे समाप्त करने के लिए भी प्रयत्नशील हैं।

डॉ. राजू एक महान गणितज्ञ तो हैं ही, वे एक महान भौतिकविद् भी हैं और महान दार्शनिक भी। वास्तव में केवल गणितज्ञ होने से वे इन पहलियों को शाब्द न तो समझ पाते और न ही सुलझा पाते। एक भौतिकविद् और दार्शनिक होने के कारण वह वर्तमान गणित और विज्ञान में घुसाए गए ‘ईसाई दर्शन’ को देख और समझ पाते हैं। काल, यानी कि समय के दर्शन को लेकर उनकी समझ एकदम स्पष्ट और भारतीय दर्शन के अनुकूल है। उन्होंने आइंस्टीन की श्रेणी के विज्ञानी माने जाने वाले स्टीफन हॉकिंग्स द्वारा दी गई काल की व्याख्या को खारिज करते हुए पुस्तक लिखी है, ‘द इलेवन पिक्चर्स ऑफ टाइम’। गणित के दर्शन में जो गड़बड़ी हुई है, उसे उजागर करने के लिए उन्होंने केवल गणित का इतिहास नहीं लिखा, उन्होंने कल्चरल फाउंडेशन ऑफ मैथेमेटिक्स (गणित का सांस्कृतिक स्थापनाएं) लिखी। यह पुस्तक केवल गणित का इतिहास नहीं बताती, उसके दर्शन को भी स्पष्ट करती है। इस कारण वे गणित के दर्शन में की गई गड़बड़ी की ओर भी संकेत करते हैं। अभी तक गणित के इतिहास पर लिखी गई पुस्तकों में यह एक अपने प्रकार की अकेली पुस्तक है।

डॉ. राजू के अनुसार कैल्कुलस का प्रयोग भारत में पहले हुआ था। भारत से ही यह पद्धति यूरोप पहुँची। वहाँ न्यूटन को यह समझ नहीं आई, जो उसे समझ नहीं आया, वहाँ अपनी बुद्धि से कुछ परिवर्तन किए। उन परिवर्तनों के साथ न्यूटन का कैल्कुलस अंग्रेजी राज में भारत आया। आज वह कैल्कुलस हम पढ़ते हैं। डॉ. राजू ने साबित किया है कि बड़े से बड़े गणितज्ञ को भी यह कैल्कुलस समझ में नहीं आता और वे केवल इसे रट जाते हैं। देश-विदेश के अग्रणी महाविद्यालयों में उन्होंने गणित के विद्यार्थियों के बीच भी इसे स्थापित किया है कि कैल्कुलस को उन्हें रटना ही पड़ता है। वह बताते हैं कि रॉकेट प्रक्षेपण से लेकर कम्प्यूटर-विज्ञान तक जितनी भी आधुनिक तकनीकें हैं, उनमें इसका उपयोग नहीं होता। वहाँ



डॉ. चंद्रकांत राजू भारतीय गणित परम्परा का अथक योद्धा

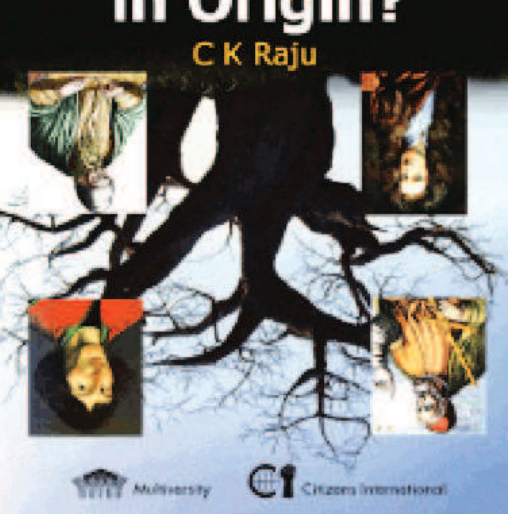
गणना के लिए एक साधारण से गणित का प्रयोग होता है, जो वास्तव में आर्यभट्ट द्वारा विकसित कैल्कुलस में दिया हुआ है।

डॉ. राजू की संघर्ष यात्रा बचपन से ही प्रारंभ हुई थी। ग्वालियर में जन्मे राजू जब उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ा रहे थे, तभी विज्ञान को लेकर उनके मन में प्रश्न घुमड़ने लगे थे और उनका विज्ञान के शिक्षकों से टकराव भी प्रारंभ हो गया था। वह बताते हैं, ‘एक बार मेरे शिक्षक इनक्लाइंड प्लेन (यानी झुकी हुई सतह) संबंधी एक प्रयोग के बारे में पढ़ा रहे थे। उसमें उन्होंने बताया कि ‘म्यू’ जो कि फ्रिक्शन का को-इफिशिएंट है वह टैन थीटा के बराबर होता है। इसे करवाते समय उन्होंने बताया कि भारी चीज जल्दी गिर जाएगी और हल्की चीज देर से गिरेगी इसलिए सतह को और अधिक झुकाना पड़ेगा। मैंने पूछा कि यदि म्यू नहीं बदल रहा है, तो थीटा कैसे बदलेगा? इस पर बच्चे हंस पड़े और शिक्षक ने स्वयं को अपमानित महसूस किया। उन्होंने बाद में मुझे कहा कि मैं एक पुस्तक का नाम और उसका पृष्ठ संख्या भी बता दूंगा, उसमें ऐसा लिखा हुआ है। मेरा कहना था कि हम विज्ञान पढ़ रहे हैं, सच्चाई की खोज कर रहे हैं, इसलिए पुस्तक में लिखा है, फिर भी वह गलत हो सकता है। इस पर वह शिक्षक मुझसे बहुत नाराज हो गए।’ राजू बताते हैं कि इसका उन्हें खामियाजा भी भुगतना पड़ा। उस शिक्षक ने बाद में उन्हें प्रैक्टिकल परीक्षा में अंत:परीक्षा में शून्य दे दिया। हालाँकि प्रैक्टिकल परीक्षा के बाह्य परीक्षक ने उन्हें 45 में से 44 अंक दिए, इस प्रकार राजू उत्तीर्ण हो गए लेकिन उनका कक्षा में स्थान थोड़ा नीचे हो गया।

राजू के लिए विज्ञान के अधिनायकवाद का यह पहला अनुभव था। वह कहते हैं, ‘मुझे महसूस हुआ कि विज्ञान केवल सच की खोज के लिए नहीं है, यह अधिकार की बात है। मुझे यह भी लगा कि विज्ञान के विषय में शिक्षक विद्यार्थी को प्रैक्टिकल परीक्षा में परेशान कर सकते हैं। ऐसा ही अनुभव मुझे महाविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई में आया। मैं मुम्बई

विश्वविद्यालय से स्नातक कर रहा था। मैं स्टूडेंट काउंसिल में भी था। कई बार कक्षा से जल्दी भी चला जाता था। डिमांन्सेटर मुझे कुछ कहता नहीं था और उसे अन्य विद्यार्थी उलाहना दिया करते थे। उस बार भी प्रायोगिक परीक्षा में उन्होंने काफी कम अंक दिए जिससे मैं लिखित परीक्षा में तो सर्वोच्च स्थान पर आया, परंतु प्रैक्टिकल परीक्षा में काफी कम अंक आए।’ राजू इन घटनाओं के कारण विज्ञान की पढ़ाई से निराश हो गए। उनकी रुचि गणित में पहले से थी, इसलिए उन्होंने विज्ञान छोड़ कर गणित की पढ़ाई करने का निर्णय लिया। विश्वविद्यालय में गणित के एक शिक्षक थे एमएस हजुरबाजार। वे एक्सट्रेट एल्जेब्रा पढ़ाते थे जिसमें उन्हें काफी रुचि जग गई थी। वह मुम्बई की लोकल ट्रेनों में यात्रा करते हुए भी इसके प्रश्न हल करते रहते थे। उसी समय उन्होंने लॉजिक एवं इलेक्ट्रानिक सर्किट देख कर कम्प्यूटर भी बनाया। उस समय कम्प्यूटर काफी अनोखी चीज थी, लोगों को समझ नहीं आता था कि यह कैसे बनता है। मेरे उन प्रयोगों को देख कर एक सज्जन ने मुझे कहा कि पढ़ाई-वढ़ाई छोड़ो और मेरे साथ आकर काम करो। उन्हें मेरे प्रयोग काफी पसंद आए थे।

राजू बताते हैं कि बचपन से ही उनकी रुचि भौतिकी में भी काफी अधिक थी। इसीलिए उन्होंने आईआईटी में प्रवेश नहीं लिया जहाँ कि उनके एक भाई पहले से ही पढ़ रहे थे। उनकी माँ चाहती थीं कि दोनों ही भाई वहाँ पढ़ें। परंतु उनकी रुचि वहाँ नहीं थी। इस प्रकार राजू प्योर मैथेमेटिक्स (विशुद्ध गणित) की ओर बढ़ गए। गणित में राजू की बहुत रुचि थी और उन्होंने पाठ्यक्रम को कक्षा से पहले ही पूरा पढ़ रखा था। इसलिए वह अक्सर कक्षा में जाते ही नहीं थे। उस अनुभव को याद करते हुए वह बताते हैं, ‘पहले से सबकुछ पढ़ा होने के कारण मैं कक्षा में बोर होता था। हमारे एक शिक्षक थे एसएस शिखंडे। वह बहुत सज्जन व्यक्ति थे। वे मुझे इसके लिए ठोकेते थे। हालाँकि कक्षाओं में रहना हमारे लिए अनिवार्य नहीं था, केवल यूजीसी द्वारा दी जाने वाली राष्ट्रीय छत्रवृत्ति



दुर्भाग्य यह है कि डॉ. राजू को सरकार से जो सहयोग मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल सका। वह गणित और विज्ञान में जो परिवर्तन चाहते हैं, वे परिवर्तन केवल अकादमिक प्रयत्नों से नहीं लाए जा सकते। वे रिलिजन और विज्ञान के जिस गठजोड़ की बात कर रहे हैं, उसके पीछे चर्च की वैश्विक राजनीति है। इसलिए इन परिवर्तनों को लाने के लिए और विज्ञान को रिलिजन से मुक्त करने के लिए अकादमिक प्रयासों के साथ-साथ राजनीतिक दृढ़ता और नीतिगत निर्णयों की भी आवश्यकता है जो सरकार द्वारा ही किया जा सकता है।

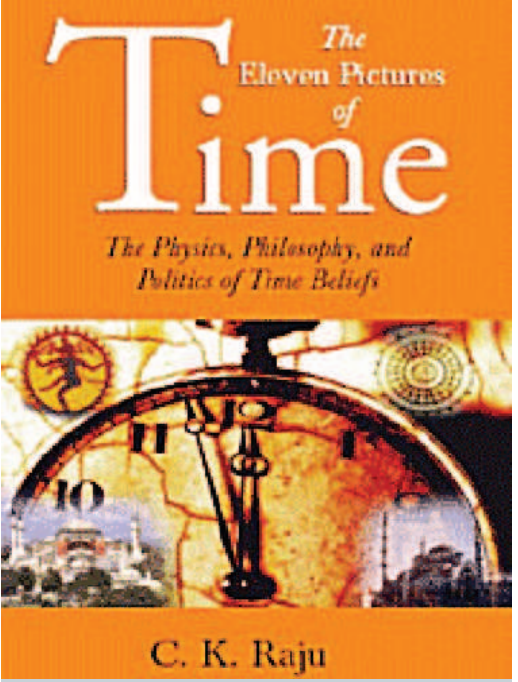
प्राप्त छात्रों के लिए यह आवश्यक था। उसके बिना छात्रवृत्ति नहीं मिलती और मुझे छात्रवृत्ति चाहिए थी।’ हालाँकि परीक्षाओं में राजू को काफी अच्छे अंक आते रहे, परंतु वहाँ भी उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा।

एसएस शिखंडे के कहने पर राजू टाटा इंस्टीट्यूट में भी गए, परंतु वहाँ जिस तरह गणित पढ़ाई जाती थी वह उन्हें पसंद नहीं आया। इसके बाद वह फिर से विज्ञान की ओर मुड़े। उन्होंने पता किया कि गणितीय भौतिकी के एक विद्वान आईआईटी दिल्ली में हैं के आर पार्थसारथी। राजू दिल्ली आए। राजू उनसे मिले कि क्या वे उन्हें पीएचडी छात्र के रूप में राजू को स्वीकार करेंगे। पहली ही भेंट में पार्थसारथी ने राजू से पूछा कि क्या वे स्पेक्ट्रम मल्टीप्लिसिटी थ्योरम को प्रमाणित कर सकते हैं। राजू बताते हैं, ‘स्पेक्ट्रम मल्टीप्लिसिटी थ्योरम को स्थापित करने के लिए एक पूरी किताब है। ऐसे ही उसे स्थापित करना कठिन है। फिर भी मैं जब परीक्षा में बैठा तो मैं इसके लिए पूरी तरह तैयार था। यदि यह प्रश्न पूछा जाता तो मैं 4-5 घंटे में उसे वहाँ पर हल कर देता। परंतु आईआईटी के शिक्षक मेरे उत्तरों से नि:शब्द हो जा रहे थे।’ मैं उस परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पर था।

राजू पीएचडी के लिए दिल्ली आए, परंतु उनका रास्ता सरल नहीं था। आते ही उन्हें पार्थसारथी ने बताया कि वह आईआईटी दिल्ली छोड़ रहे हैं। राजू बहुत हैरान हुए। वे उनसे पहले मिल चुके हैं और अपनी यूजीसी की छत्रवृत्ति छोड़ चुके यहाँ आए थे। परंतु पार्थसारथी ने उन्हें साफ कह दिया कि वह अपने बाकी छात्रों को तो अपने साथ आईएसआई भारतीय सांख्यिकी संस्थान, दिल्ली में ले जाएंगे। उन्हें चूँकि वे ठीक से जानते नहीं, इसलिए राजू को उसकी प्रवेश परीक्षा देनी होगी। इस प्रकार डॉ. राजू ने पहले आईआईटी की परीक्षा दी और उसमें सर्वोच्च रहने के तुरंत बाद उन्हें आईएसआई की परीक्षा में बैठना पड़ा। उस परीक्षा में राजू ने केवल कठिन सवालों को हल किया, आसान सवालों को छोड़ दिया। राजू बताते हैं, ‘वह परीक्षा मैंने 44 डिग्री की तेज गर्मी में दी थी। मुझे लगा कि इतनी गर्मी में मैं इन आसान सवालों को हल करने में समय नहीं लगा सकता।’ हालाँकि आईएसआई की परीक्षा में यह देखा जाता है कि परीक्षार्थी कैसे प्रश्नों को हल करने का

प्रयास करता है। इसलिए राजू का चयन वहाँ भी हो गया।

आईएसआई में भी राजू को समस्याओं का सामना करना पड़ा। वहाँ उन्हें जिस विषय पर काम करने के लिए दिया गया, उस विषय पर पार्थसारथी के एक पुराने छात्र राजेंद्र भाटिया पहले ही काम कर रहे थे। एक ही विषय दो छात्रों को दिए जाने के अलावा राजू को एक समस्या यह भी लगी कि उस विषय को पहले से ही हल किया जा चुका था। फिर भी राजू ने उस विषय पर तीन व्याख्यान दिए। वह जब उन लोगों को समझ नहीं आया। उन्हें उस पर नोट लिख कर देने के लिए कहा गया। राजू ने नोट लिखकर दिया तो उसे खारिज कर



डॉ. राजू इसलिए व्यथित थे कि उन्हें विश्वास नहीं हो पा रहा था कि विज्ञान में भी इस तरह का खिलवाड़ किया जा सकता है। वह कैल्कुलस की खामियों को स्पष्ट करते हुए पहले भी साबित कर चुके थे कि उसमें समय को एकत्रैधिक बना दिया जाता है जो कि हमारे सभी आस्थाओं के विरुद्ध है। डॉ. राजू कहते हैं, ‘हो सकता है कि हमारी आस्था गलत हो। परंतु ऐसा क्यों है कि हम मेटाफिजिक्स के आधार सभी को खारिज कर रहे हैं? यदि वास्तव में दुनिया किसी और प्रकार की है तो हम मान भी लेंगे, परंतु किसी ने कह दिया है, केवल इसलिए हम क्यों मान लें?’

दिया गया और फिर से लिखने के लिए कहा गया। कुछ दिनों बाद राजू को पता चला कि किसी ने उनके नोटों को ही अपनी थ्योरी के रूप में प्रकाशित करवा दिया था। उन्हें यह बुरा लगा कि उन्हें इस बारे में पहले बताया भी नहीं गया।

इसके बाद पार्थसारथी ने उन्हें गाइड करने से मना कर दिया। राजू को नोटिस दे दिया गया कि नया गाइड दूँडे या फिर इंस्टीट्यूट छोड़ कर चले जाएं। राजू बताते हैं कि आईएसआई में छात्र कम ही टिकते थे। एक महीने में छात्र तंग हो कर भाग जाया करते थे। राजू संकट में आ गए। उन्होंने अपनी थिसिस कई लोगों को भेजी। इस पर अंतरराष्ट्रीय भौतिकीविद् पीएएम डिैंक, आईआईटी के सी एस मेहता, दिल्ली विश्वविद्यालय के ए एन मित्रा, पॉल डेविस आदि की सकारात्मक टिप्पणियां आ गईं। इन टिप्पणियों के कारण आईएसआई ने राजू को नहीं निकाला। राजू बिना गाइड के ही काम करते रहे। उन्होंने अपनी थिसिस जमा की। उन्होंने जयंत नार्लींकर के एबजावर्न थ्योरी ऑफ रेडिेशन के खंडन में उन्होंने अपनी थिसिस लिख कर जमा की। उसे यह कहकर लौटा दिया गया कि इसमे स्टैटिस्टिक्स नहीं है। फिर राजू ने इस तरह के अनेक उदाहरणों को सामने रखते हुए अपनी थिसिस का सिर्नाप्सिस नए प्रारूप

में लिख कर जमा किया। संस्थान के शिक्षक इस पर बहुत हैरान हुए और आईएसआई ने उन्हें एक गाइड दे दिया और उन्हें कोलकाता भेज दिया। पीएचडी की थिसिस केवल तीन महीनों में फिर से लिख देना कोई छोटी बात नहीं थी। उसी बीच उनकी पत्नी को भी आईआईएम अहमदाबाद में काम मिल गया था, इसलिए राजू ने दिल्ली छोड़ दिया।

वर्ष 1990 में राजू ने कोलकाता में ही पीएचडी पूरी की। परंतु उनकी पीएचडी को स्वीकृत करने में संस्थान ने पूरे तीन साल लगा दिए। दूसरी ओर उनके ही लेकर-नोट के आधार पर काम करने वाले राजेंद्र भाटिया को युवा विज्ञानी पुरस्कार दिया गया। यह इस देश की शिक्षा व्यवस्था में आई गिरावट को ही दर्शाता है। राजू इससे घबड़ाए नहीं, वह एक और संघर्ष की तैयारी में जुट गए। आमतौर पर आईएसआई जैसे बड़े संस्थान से पीएचडी करने के बाद छात्र बड़े संस्थानों में जाते हैं या फिर विदेश चले जाते हैं। राजू के मन में एक उत्सुकता थी कि अपने देश में विज्ञान की अच्छी पढ़ाई और शोध क्यों नहीं होता। इसलिए उन्होंने एक राज्यस्तर के विश्वविद्यालय में जाकर काम करने का निश्चय किया। आमतौर पर आईएसआई या आईटीआई जैसे बड़े संस्थानों से निकले लोग राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय में काम करने नहीं जाते। इनमें कोई चमकदार कैरियर तो होता नहीं है। परंतु राजू इस चमक-दमक का मोह छोड़ कर पूना विश्वविद्यालय में पहुँच गए और वहाँ गणित पढ़ाने लगे।

राजू उस समय वही +आधुनिक+ गणित पढ़ाते थे जिसे आज वह पूरी तरह खारिज कर रहे हैं। वह कहते हैं,



डॉ. राजू ने इस दौरान अपने शोध को और बढ़ाया। चार-पाँच वर्ष इस पर निरंतर शोध के बाद उन्हें इसके रहस्य ता पता चला। वह कहते हैं, ‘निस्टैड में काम करते हुए मैंने अपनी पुस्तक इलेवन पिक्चर्स ऑफ टाइम लिखी। उसे लिखते-लिखते मुझे इसका भेद समझ आया। समय की संकल्पना में विज्ञान और रिलिजन किस प्रकार टकराते हैं? साथ विज्ञान में रिलिजन किस प्रकार घुस गया है? यह उसमें घुसा है गणित के माध्यम से। स्टीफन हॉकिंग ने यह काम किया है। यह सह जानकर मुझे काफी धक्का लगा। स्टीफन हॉकिंग ने अपारटीन के सिद्धांतों को लेकर समय के सिद्धांत में घुसा दिया। मैंने अपनी पुस्तक में उजागर किया है।

‘विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाए जाने वाले कैल्कुलस में खामियां हैं। यह मेरी पीएचडी थिसिस में भी शामिल था कि विश्वविद्यालय में पढ़ाए जाने वाले कैल्कुलस में कुछ खामियां हैं। यदि हम उसे भौतिकी में प्रयोग करते हैं तो उनका पता

चलता है। एक खामी यह है कि आधुनिक कैल्कुलस में कन्टीन्यूअस और डिफ्रेंशियल फंक्शन होते हैं और दोनों में संबंध होता है कि डिफ्रेंशियल फंक्शन अनिवार्य रूप से कन्टीन्यूअस यानी निरंतर होता है। अब यदि कोई डिस्कन्टीन्यूइटी आ जाए यानी कि कोई शार्ट वेव आ जाए तो भौतिकी में उसे कैसे सुलझाया जाएगा। आधुनिक कैल्कुलस इस खामी के बारे में मैंने अपनी पीएचडी थीसिस में लिखा था। कई वर्षों तक लोगों को यह खामी समझ में नहीं आई थी। यह सब मैं एडवांसड फंक्शनल एनालिसिस में पढ़ाता भी था। कैल्कुलस के बाद एडवांस कैल्कुलस होता है, उसके बाद मैथेमेटिकल एनालिसिस, उसके ऊपर फंक्शनल एनालिसिस और उसके ऊपर एडवांसड फंक्शनल एनालिसिस होता है। यह बहुत ही एडवांस मैथेमेटिकल फिजिक्स है और दुनिया में इसे समझने वाले थोड़े ही लोग हैं।’

पूना विश्वविद्यालय में नई समस्या सामने आई। यह वह समय था जब देश में इंजीनियरिंग कॉलेजों की बाढ़ आ रही थी। गली कूचे में इंजीनियरिंग के कॉलेज खुल रहे थे। कॉलेज तो खुल रहे थे, परंतु उनके पास इंफ्रास्ट्रक्चर और सुविधाएं होती नहीं थी। ऐसे में वे विश्वविद्यालयों के साथ गठजोड़ करते थे। पूना विश्वविद्यालय में भी यह खेल चल रहा था। राजू बताते हैं, ‘जब मैंने विश्वविद्यालय में काम शुरू किया था, उस समय गणित के विभागाध्यक्ष थे एस एस अभ्यंकर। वह गणित के बहुत अच्छे जानकार थे। उनके बाद एक ऐसे व्यक्ति को लाया गया जो इंजीनियरिंग कॉलेजों के साथ गठजोड़ रखने वाले वहाँ के एक अधिकारी एन सी जोशी के अनुकूल था। इससे मुझे कोई समस्या नहीं थी, परंतु विवाद भरे एक सहयोगी नरेश दाधीच के साथ हुआ। मैंने नरेश दाधीच का साथ दिया। इस पर वहाँ विवाद होने लगा। मुझे गणित विभाग से हटा कर स्टैटिस्टिक्स विभाग में भेज दिया गया। इन सब बातों से ऊब कर मैंने वहाँ इस्तीफा दे दिया।’

डॉं राजू जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति के लिए नौकरियों की कोई कमी थी नहीं। उन्हें कई सारी नौकरियों के प्रस्ताव मिल गए। वह देश की अकादमिक संस्थाओं में चलने वाली राजनीति से ऊब चुके थे इसलिए उन्होंने सीडैक में काम स्वीकार कर लिया। सीडैक में डॉ. राजू देश के पहले का पहला सुपर कम्प्यूटर परम बनाने में जुट गए। सीडैक भी पूना में ही था इसलिए डा. राजू का वास्ता फिर उन लोगों से पड़ने लगा जिनसे विवाद के कारण वे पूना विश्वविद्यालय को छोड़ आए थे। दरअसल सीडैक में ढेर सारे प्रोजेक्ट थे जिस पर काम करने के लिए लोगों तथा संस्थाओं को वित्तीय सहायता दी जाती थी। उसके लिए उनके पास लोगों की भीड़ होने लगी। सीडैक में काम करते हुए डॉ. राजू को कैल्कुलस की खामी दूर करने का उपाय मिला। वह बताते हैं, ‘पार्शियल डिफ्रेंशियल इन्ट्रेशन की जिस समस्या में मैं काम कर रहा था, उसे काफी कठिन विषय माना जाता है। लेकिन मैंने देखा कि वहाँ इसे बड़ी ही सरल विधि से हल करते हैं। मुझे लगा कि इतने बड़े सिद्धांतों का क्या लाभ यदि हमें इसका समाधान इतनी आसानी से मिल रहा है। हालाँकि मैंने उस समय तक आधुनिक गणित को छोड़ नहीं था, लेकिन यह बात मुझे परेशान कर रही थी कि यदि इसे हल करना इतना आसान है तो इसकी थ्योरी यानी कि सिद्धांत इतना कठिन क्यों है।’

यहाँ काम करते हुए डॉ. राजू ने पाया कि विश्वविद्यालय छोड़ने के पीछे उनका एक उद्देश्य यह था कि वह समय के सिद्धांत पर अपने विचारों को और पुष्ट करने के लिए काम करना चाहते थे जो वहाँ की राजनीति में हो नहीं पा रहा था। अकादमिक जगत को छोड़ने के बाद उन्हें लगा कि उनका शोध का काम रूक गया है और उन्हें इसे करना ही चाहिए। वह सीडैक में रहते हुए अपने समय के सिद्धांत पर काम करते रहे और उन्होंने अपनी पुस्तक भी पूरी कर ली। सीडैक में काम करते हुए उन्हें तीन वर्ष हो चुके थे जब उनकी भेंट दिल्ली में जगदीश मेहरा से हुई। डॉ. राजू सीडैक की ओर से एक मंत्रालय के कम्प्यूटीकरण के लिए गए थे। किसी और को ढूँढ़ने के क्रम में वे एक कमरे में घुसे तो उनकी भेंट जगदीश मेहरा से हो गई जो उनकी क्षमता और योग्यता से परिचित थे।

शोध एवं अलाख : रवि शंकर,

आभार ‘भारतीय धरोहर’ पत्रिका